पद १

(राग: खमाज - ताल: धुमाळी)

सिच्चिद्धन परब्रह्म निजात्मा वेदागम्य तो माणिक रे।।ध्रु.।। भूतल बहु पापिष्ट जनानीं किलयुगीं व्यापित झालें रे। यास्तव सुरगण सकलिह मिळुनी प्रार्थिति दत्तात्रेया हे।।१।। कृपासिंधु भक्तकार्यकल्पद्धम गुरु सकलमतां उद्धारी रे। ऐसी प्रार्थना ऐकुनि गुरुवर प्रगटला श्रीवत्स गोत्रीं रे।।२।। तोडुनि दुर्जन संतचि केले स्थापियले निगमोक्ता रे। माणिकदास मनोहर विनवी ध्यातां त्या मोक्षप्राप्ती रे।।३।।